दो माताएँ

कथाः लीला मजुमदार

चित्रः जगदीश जोशी

भारत के तार व बेतार विभाग के कर्मचारियों को कई तरह के अनुभवों से गुज़रना पड़ता है। वे लोग घने जंगलों में, चंचल नदियों के किनारे, खड़े पहाड़ों की तलहटियों में यानी विभिन्न दुर्गम स्थलों पर रिकॉर्डर, कैमरा लटकाए हुए भागते-दौड़ते रहते हैं। वे भारत के वन्यप्राणियों व आदिवासियों की ज़िन्दगी के बारे में नई-नई खोज-खबरें जुटाते फिरते हैं। यह कथा भी उसी तरह की घटना पर आधारित है।

नक्शे में भारत का उत्तर-पूर्व हिस्सा देखो तो लगता है मानो कोई विशाल घोड़ा हो, जो पश्चिम बंगाल के कँधों पर सिर रखकर मज़े में खड़ा है। उस जगह को कभी असम कहा जाता था। अब तो इसके कई टुकड़े होकर विभिन्न नामों से जाने जाते हैं। इसी तरह के एक अनजान प्रदेश में पहाड़ की तलहटी में आदिवासियों का एक छोटा-सा गाँव है। बड़े-बड़े साल के पेड़, जंगलात, बाँस के झुरमुट मानो गाँव पर पहाड़ से उतर आए हों। मन करता है, यहाँ दो-तीन दिन रुक जाएँ। गाँव का नाम है हतिया।

पहले कुछ दिनों तक ये लोग किसी विदेशी को गाँव में आने नहीं देते थे। उनका कहना था कि इससे उनका सब कुछ खत्म हो जाएगा। आज स्थिति यह है कि बाहर के लोग भी गाँवों में आ गए हैं। आज यहाँ अस्पताल, रास्ते बन गए हैं। पाइप डालकर पहाड़ के झरने से पानी की व्यवस्था हो गई है। पिछली बार तार व बेतार विभाग के लोगों को शीत-विदाई के मौसमी-उत्सव में शामिल होने की अनुमति दी गई थी।

यह विचित्र उत्सव है – बिल्कुल अलग तरह का। पहाड़ के नीचे रंगीन किस्म के पत्थर की एक खाई के पास कारीगिरी के सुन्दर नमूने के रूप में लकड़ी का एक मन्दिर है। मन्दिर में कोई मूर्ति नहीं है। बस दीवारों व छतों पर खुदाई करके बनी छोटी-छोटी मूर्तियाँ हैं। हथिनी माँ के पास बच्चा हाथी। माँ की गोद में छोटा बच्चा। पूजा जैसी कोई बात नहीं, बल्कि कतारों में माताएँ, लड़कियाँ, लड़के, बूढ़े, सभी घड़े-घड़े भरकर दूध, डलियों में फल, मिट्टी की कुप्पियों में शहद ले लेकर हाज़िर हो रहे थे। बाद में, घण्टे की ध्वनि पर गाते-बजाते उस सबको घने जंगल में रख आए। लौटकर नाच, गाने-बजाने में लोग मस्त हो गए।

तार विभाग के कर्मचारियों को बड़ा दुख हुआ कि इतनी

अच्छी सामग्रियों को जंगल में फेंक दिया गया। खुद न खाएँ तो क्या, बाहर के लोग भी तो हैं! एक आदिवासी लड़के ने कुछ चिढ़कर कहा, "छि छि ऐसी बात करना भी पाप है। इन सब चीज़ों को तो हाथियों के लिए दे आया गया है। वे ही इन्हें खाएँगे।"

"अच्छा तो उनको पता कैसे चलेगा, यह सब रखा गया है?"

"क्यों, घण्टों की आवाज़ है ना! गाने-बजाने की आवाज़ पाते ही वे सब पहाड़ की तलहटियों से इधर निकल आएँगे। वे सब बड़े होशियार होते हैं, इन सब मामलों में।"

"लेकिन इतने सारे जानवर हैं, फिर हाथी ही क्यों?"

इसके जवाब में गाँव के बड़े-बूढ़े ने यह किस्सा कह सुनाया–

...

उस समय हाथियों का यहाँ ठिकाना था। मनुष्य और हाथी दोनों मिलजुलकर रहते थे। उस समय विदेशी सौदागर यहाँ ाँव की औरतें उन मोहरों को गले में डालकर सजने लगी थीं। आकर मोहर देकर हाथी खरीद ले जाते थे। गाँव की औरतें उन मोहरों को गले में डालकर सजने लगी थीं। हाथी पकड़ने का कायदा उन्हें पता नहीं था, इसलिए जाल डालकर उन्हें पकड़ना शुरू किया। जाल भी कैसा? ज़मीन खोदकर गड्ढा बनाया जाता और उसे घास-फूस से ढँक दिया जाता था। हाथियों को पता नहीं चलता था। उसके ऊपर चलते ही हाथी गड्ढे में जा गिरते थे। बड़ी भयानक चिंघाड़ होती थी उनकी। चिंघाड़ सुनकर गाँव के लोग उन्हें रस्सियों से बाँध देते। और सौदागर गड्ढों से निकालकर उन्हें ले जाते थे। जाते समय गाँव के मुखिया को मोहर दे जाते। उस झुण्ड के दूसरे हाथी दोबारा उस जंगल में दिखाई नहीं पड़ते थे। क्योंकि हाथियों को गाँव के लोगों पर भरोसा नहीं रहा।

रहता भी कैसे? आमने-सामने दुश्मन हो, तो शत्रु को माफ किया जा सकता है, लेकिन लुक-छिपकर जो गड्ढे खोदते हैं, उनको कैसे माफ किया जाए?

गाँववालों की इतने दिनों से दुश्मनी केवल बाघ से थी। अब दो दुश्मन हो गए थे – काला बाघ और जंगली हाथी। हाथी भगाने के लिए खेत पर पहरा बैठाया गया। कनस्तर व ढोल बजाकर खबर कर दी जाती थी कि हाथियों का दल आ रहा है। लोग मशाल जलाकर और बरछे लेकर तैयार हो जाते। लेकिन बाघ बिना किसी तैयारी के घुस आते थे। अँधेरे में चुपचाप, जंगली झाड़ों के बीच लुक-छिपकर। उन्हें कोई रोक नहीं सकता था।

एक दिन की बात है। जाड़े के अन्तिम दिनों में घर के दरवाज़े, खिड़कियाँ खोलकर लोग वसन्त के स्वागत के लिए बाहर निकल गए थे। ऐसे वक्त ढाक-ढोल, कनस्तर की आवाज़ गूँज उठी थी। लोगों को सचेत कर दिया गया था कि हाथियों के दल दिखाई पड़े हैं। सभी लोग हाथियों का सामना करने उस तरफ दौड़ पड़ थे। नहीं तो इस बार की सारी फसल बरबाद हो जाती।

मौका देखकर काला बाघ वहाँ आ गया और मुखिया के पाँच महीने के बच्चे को कपड़े समेत उठा ले गया। बच्चे की माँ की नींद वैसे भी पतली होती है। आँखें खुलते ही बाघ को देखा। बाहर रखी मशाल को उठाकर "लखिया रे..." पुकारती हुई उसके पीछे-पीछे दौड़ी। घर में और कोई नहीं था। मोहल्ले की औरतों को खबर लगी, पर वे सब डर के कारण आगे नहीं आईं।

बाघ जंगल की तरफ भाग गया। जंगल में छुपने का जो रास्ता था वह हाथियों के चलने का भी था। वहाँ गड्ढे बने थे जिनके ऊपर डाल-पत्ते बिछे थे। एक गड्ढे में एक बच्चा हाथी गिर गया था। बच्चे हाथी के रोने की आवाज़ ठीक इंसान के बच्चे की तरह थी। गड्ढे के ऊपर उसकी माँ छाया की तरह चारों तरफ चक्कर मार रही थी। बाघ उसकी बगल